. प्रो.अजीत कुमार वर्मा
××××××××××××××××

विद्वत्ता-साहित्यिकताक मूर्ति

^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

–भीमनाथ झा

++++++++

ताहि दिन जँ ग्रेजुएशनमे कोनो-ने-कोनो रूपेँ प्रत्येक छात्रकेँ हिन्दी साहित्य पढ़ब अनिवार्य रहितै तँ सी.एम.कालेजमे हम हिनक वर्ग-छात्र रहितियनि। किन्तु, से नहि रहने 1960-62 सत्रमे ताहि सौभाग्यसँ चुकि गेल रही। चुकब मुदा एतै ओर नहि लेलक। पछोड़ धयनहिँ रहल। इस्वी 1982 मे मैथिलीक व्याख्याता-रूपमे सी.एम.कालेजमे आयल रही,ताहिसँ पहिने ई विश्वविद्यालय हिन्दी विभागमे नरगौना पैलेस चल गेल रहथि। चरफर रहितहुँ तँ सभ विषयक सीनियर लोकनिसँ परिचयपात करितहुँ, आपकता बढ़बितहुँ, नरगौनहुँ जाक' विभागे-विभाग मुड़ियारी दितहुँ, अपनहुँकेँ चिन्हबितहुँ, हुनको लोकनिकेँ चिन्हितहुँ। किन्तु, 'चुकब' ओतहु छोड़लक नहि। दब्बूपनक इनाम यैह जे अपने पिँजड़ामे बेसुरा सूगा बनल टिटिआइत रहलहुँ। ओ तँ धन्न कही रमाकान्त बाबू (प्रो.रमाकान्त मिश्र, अङरेजी विभाग, सी.एम.कालेज)क जे एक दिन अपन डेरापर ल' जयबा ले' हमरा संग क' लेलनि। इनकम टैक्स चौकपर हुनक समवयस्के वा कने बीस एक प्रतिष्ठित तेजस्वी व्यक्ति भेटि गेलथिन तँ हुनकोसँ कुशल-मंगल कयलनि। दू मिनटक बाद हमरा दिस इंगित करैत कहलथिन– ई मैथिलीमे नव अयला अछि। 'मिथिला मिहिर'मे उपसंपादक छला। ताहिपर ओ कहलथिन– हँ-हँ, रामदेव बाबू कहै छला हिनका द'। आब रमाकान्त बाबू हमरा दिस घुमला– ई थिकाह प्रो.अजीत कुमार वर्मा, पी.जी. हिन्दी विभागमे सीनियर प्रोफेसर छथि। हम हाथ जोड़ि प्रणाम कयलियनि। विदा होइत गेलहुँ। बाटमे रमाकान्त बाबू कहलनि– बड़ लोकप्रिय शिक्षक, यशस्वी, विशिष्ट विद्वान्। कवि सेहो थिका। लक्ष्मीसागरमे अपन मकान छनि। बस।

किछु अन्तरालक बाद 'हैरो पब्लिक स्कूल'क प्रांगणमे एक टा लघु गोष्ठी जमल रहै, किनको जन्मदिनपर प्रायः। ताहिमे सुमनजी, अमरजी, मदनेश्वर मिश्रजी, रत्नेश्वर मिश्रजी, रमाकान्त बाबू, रामदेव बाबू, ग्रन्थालयक रमनी बाबू एवं आर आठ-दस संभ्रांत सज्जन आयल रहथि। वर्माजी सेहो रहथि। ओहि दिन प्रथमहि हिनक वक्तव्य सुनलियनि। सहज, लयात्मक, सुच्चा मैथिली टोनमे मधु टपकैत सारगर्भित ओहन वाणी सुनि हम तँ विभोर भ' गेल रही। मनेमन प्रणाम कयलियनि, भक्त भ' गेलियनि। पछाति, हमर जिज्ञासापर गुरुवर सुमनजी ओ अमरजी वर्माजीक विद्वत्ता आ सौजन्यक भूरि-भूरि प्रशंसा कयने रहथिन।

महाकवि यात्रीजीक द्वादशाह दिन मैथिली साहित्य परिषदक दिससँ स्थानीय लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी लालबागमे आयोजित शोकसभामे वर्माजीक वक्तव्य सभसँ सारगर्भित आ चर्चित रहलनि। ओ नागार्जुन-यात्रीक व्यक्तित्व आ कृतित्वक तेहन शानदार ओ मार्मिक व्याख्या मैथिलीमे उपस्थित कयने रहथि जे बहुत दिन धरि कानमे गुँजैत रहल। यात्रीजीपर ओहन विश्लेषण ध्यानमे थोड़ अबैत अछि।

हिनक भाषण सुनब एक खास अनुभव थिक। अपना संगे ई एक भिन्ने सारस्वत संसारमे ल' चलैत छथि, जत' चिरशान्ति रहैछ। भान होइछ जेना साक्षात् सरस्वतीक श्रीमुखसँ निःसृत अमिय वाणी सहज रूपमे कलकल करैत प्रवाहित होइत सोझे हृदयमे प्रवेश क' रहल हो, मोहित क' रहल हो, समृद्ध क' रहल हो। एकोरती अगुताइ नहि, एको शब्द अतिरिक्त नहि, कनियोँ उतेजना नहि। ने अति लघु, ने अति दीर्घ। सम्पन्न भेलापर तृप्तियो भेटैछ आ अतृप्तियो बनल रहि जाइछ।

एकर बाद, एहन सारस्वत व्यक्तित्वसँ सम्पर्क सधबाक आ सिखबाक लालसा जागब स्वाभाविक छल, किन्तु उपकरिक' किनको 'डिस्टर्व' करबाक साहस, संकोची स्वभावक कारणे, नहि भेल कहियो, कतहु।
किन्तु, हमर सौभाग्यसँ समयकेँ ई मंजूर भ' गेलै आ हम कालक्रमे स्थायी रूपेँ लक्ष्मीसागर मोहल्लामे खन्ती गाड़ि लेलहुँ। ताहूमे वर्माजीक आवासक निकटे। किन्तु, एतेक सीनियर लग सटब संकोचेँ टरैत रहल। किन्तु, एतहु भाग्य

जोर कयलक, हमर भातिज श्री हीरेन्द्र कुमार झा, जे बैंक अफसर रहथि, से हिनके मकानमे भाड़ादार भ' गेला। फेर शुरू भेल हिनक डेरापर अबरजातक सिलसिला, जे क्रमश: धररोहि लागि गेल। हमर माय, पत्नी, सभ धीयापूता, तहिना हीरेन्द्रोजीक डेरासँ हमर भाइ, भौजी, हुनक सभ सन्तानक अवर्यात रहरहाँ शुरू भ' गेलै । स्वाभाविक छलै जे वर्मोजीक परिवारक संग हमरो परिवारक सम्बन्ध जुड़ि गेलै।

किछुए दिनमे मनमे ई साफ भ' गेल जे फुरसतिक क्षणमे जते वेग भाइ-भौजीसँ भेट करबाक रहै छल, ताहिमे वर्मोजीक सान्निध्य-सुखक कामना अनायासे घुलिमिलि गेल छल। भाग्य ई जे हिनक दर्शन प्रायः प्रत्येक खेप भैए जाइ छल। कुशल-मंगल धरिक क्रम कमे दिन धरि सीमित रहल। बादमे तँ जाड़मे बाहर प्रांगणमे रौदमे पटियापर आ अनदिना बाहरी बरंडापर कुर्सी वा पलंगपर आरामसँ विराजमान भ' आ हमरो लगेमे आबेसपूर्वक बैसाक' अधिक काल काव्यामृत प्रसादो सस्नेह प्रदान क' दैत छला, ताहिसँ हम तृप्ते नहि, अपितु अपनाकेँ अधिक समृद्ध अनुभव कर' लगै छलहुँ।

आब तँ ईहो वय-व्याधिक प्रकोपसँ शरीरेँ न्यूनाधिक शिथिल रह' लगला अछि आ हमहूँ ताही झटकासँ बेर-बेर पटका जाइत रहलहुँ अछि। तेँ, संगति-सुखक सुयोग भने कम जे भ' गेल हो, किन्तु अन्त:सलिला उभय हृदयमे सदा कलकल निर्मल अविरल बहिए रहल अछि, बहिते रहत।

हिनक विद्वत्ताक प्रसंग हम किछु कही, से हमरा शोभा नहि देत। ई ओहि सारस्वत मण्डलक ज्योतिर्मय एक नक्षत्र थिका, जाहिमे प्रो.रमाकान्त पाठक, प्रो.बम शम्भुदत्त झा, प्रो.प्रभाकर पाठक, प्रो.रामधारी सिंह दिवाकर प्रभृति विद्वान् ओ साहित्यकार भूषण लोकनि जगमगाइत रहथि तथा बिहारमे हिन्दियहु क्षेत्रमे मिथिलाक ध्वजा विश्वविद्यालयीय सारस्वत आकाशमे शानसँ फहराइत रहै।

हिनक अति समृद्ध पुस्तकालय हमरा देखल अछि, जाहिमे हिन्दी साहित्यक तँ प्रायः प्रत्येक क्लासिक एवं नूतन-पुरातन ग्रन्थभण्डार छले जे आनो भाषाक सैकड़ो साहित्य आ दर्शनक ग्रन्थसँ भरल छल। हम स्वयं देखने छियनि जे यात्रीजी लगभग गोटेक सप्ताह धरि हिनका ओत' रहिक' पुस्तकालयक दुर्लभ पोथी सभक अध्ययन करैत रहथि। ओ ग्रन्थ सभ आब विश्वविद्यालयक केन्द्रीय पुस्तकालयकेँ जगमगौने अछि।

हिनक गीतकाव्य उच्च गुणवत्तासँ मण्डित छनि, जाहिमे दर्शन ओ अध्यात्मक अन्त:सलिला बहैत अछि। ई सभ अपन जगहपर छैक। शिक्षकक मूल रचना तँ थिकै ओकर पढ़ाओल राशि-राशि छात्रसमुदाय। से जते अधिक रहतै, जते यशस्वी रहतै, जते प्रख्यात रहतै, ततेक अधिक गुरुक गुरुत्व पसार लेतै, प्रकाशित हेतै, नक्षत्र बनतै।

श्रीमान् अजीत कुमार वर्माजी अपन परम यशस्वी राशि-राशि छात्रसमुदायक पूज्यपाद गुरुवर थिका, केवल ताहू ल'क' ई सारस्वत आकाशक ध्रुवतारा बनल रहता। मुदा, एहिसँ भिन्नो हिनक महत्ता समाजक बीचमे गहींर धरि गेल छनि। साहित्यदेवताक प्रभाव दृश्यसँ अधिक अदृश्य रूपेँ समाजपर
पड़ै छै आ सोचकेँ स्वच्छ करै छै। अपन मातृभाषा मैथिलीक प्रति जे हिनक हृदयमे उच्च स्थान छनि, जकरा ई हृदयासनपर मातृस्थानीय मानि विराजमान कयने छथि, ओ विषाक्त बना देल गेल बसातक परबाहि किए करओ ?

विद्याक बसातकेँ विषाक्त होयबासँ बचयबे प्रिय शिष्यक दिससँ महान् गुरुकेँ सभसँ मूल्यवान गुरुदक्षिणा होयतनि।

*** *** ***

(13. 09. 2024.)